International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 56-58

मलयालम कवि कुमारनाशान के काव्य में युग बोध

डॉ॰ जार्ज जोसफ
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, क्राईस्ट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी), बेंगलूरु - २९, कर्नाटक , भारत |

सारांश
कुमारनाशान मलयालम काव्य साहित्य के वरिष्ठ एवं लोकप्रिय कवि रहे । इनकी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा ने उनको आधुनिक भारतीय साहित्य में एक उत्कृष्ठ स्थान प्रदान किया है । भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से इनकी रचनाएँ अत्यंत श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि की हैं । वे भारतीय संस्कृति के अमर व्याख्याता थे । इनके काव्य की आधार शिला भारतीय संस्कृति ही हैं । भारतीय सांस्कृतिक दीप्ति, आत्मसम्मान, क्रांतिकारी चेतना, गंभीरता एवं आत्मविश्वास की भावना भी इनमें पर्याप्त मात्रा में दर्शनीय हैं । कुमारनाशान ने मलयालम कविता को जाति, वर्ण, देश और काल की सीमाओं से मुक्त कर विश्वप्रेम के असीम आदर्शों की ओर उन्मुख किया । कुमारनाशान को मलयालम भाषा के 'कालिदास' माने जाते थे । भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से इनकी रचनाएँ अत्यंत श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि की है । उनके काव्य में युग बोध की प्रवृत्तियाँ भरपूर दिखाई पडती है, जैसे मानवतावादी चेतना, विद्रोही स्वर, राष्ट्रीय चेतना, दार्शनिकता, प्रेम की अभिव्यक्ति, आत्माभिव्यक्ति इत्यादि । इसके आधार पर कवि के व्यक्तित्व में युगबोध विस्तार से प्रतिफलित होता है ।

मूल शब्द : कुमारनाशान, भावपक्ष , कलापक्ष ।

प्रस्तावना
कुमारनाशान का जन्म एक शिक्षित परिवार में हुआ था । उनका लालन-पालन ग्रामीण, प्राकृतिक और साहित्यिक वातावरण में संपन्न हुआ । वे जन्म से ईषव जाति (निम्न जाति) के थे । निम्न जातियों का उद्धार, समाज और देश का आमूल परिवर्तन उनका लक्ष्य रहा । सामाजिक समस्यओं के प्रति उनकी प्रतिक्रिया आक्रोशपूर्ण थी । उनकी सारी रचनाएँ तत्कालीन युग की सच्ची दस्तावेज़ थी । उन्होंने अपने विचारों एवं अपनी भारतीयता पर पूर्ण विश्वास रखकर ही काव्यों की रचना की है । बचपन से ही उनको जीवन की पीड़ाएँ तथा कठिनाइयाँ झेलनी पड़ीं । परिणामस्वरूप वे मानवतावादी बने । बचपन से वे आस्तिक रहे इसलिए उनके व्यक्तित्व में भक्ति और धार्मिक भावना की ओर विशेष झुकाव दर्शनीय है । साहित्य में रुचि उनको विरासत के रूप में मिली है।
कुमारनाशान ने आधुनिक मलयालम कविता के क्षेत्र में अभूतपूर्व नवीनता का प्रसार किया। कल्पना प्रवण इस नई चिन्तन धारा को आलोचकों ने 'काल्पनिक प्रस्तानम' शीर्षक से पुकारा | रचनात्मक, तीव्रभावनात्मक एवं कल्पना संजात यह काव्य धारा आगे चलकर कुमारनाशान, वल्लत्तोल और उल्लूर (कवित्रयम) के काव्य जगत में चरम उत्कर्ष तक पहुँचती है । कुमारनाशान इनमें सबसे मूर्धन्य कवि थे । इन महान कवियों ने मलयालम कविता को जाति, वर्ण, देश और काल की सीमाओं से मुक्त कर विश्वप्रेम के असीम आदर्शों की ओर उन्मुख किया । कुमारनाशान को मलयालम भाषा के 'कालिदास' माने जाते थे ।
कुमारनाशान मलयालम काव्य साहित्य के वरिष्ठ एवं लोकप्रिय कवि रहे । इनकी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा ने उनको आधुनिक भारतीय साहित्य में एक उत्कृष्ठ स्थान प्रदान किया है । भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से इनकी रचनाएँ अत्यंत श्रेष्ठ एवं उच्च कोटि की हैं । वे भारतीय संस्कृति के अमर व्याख्याता थे । इनके काव्य की आधार शिला भारतीय संस्कृति ही हैं । भारतीय सांस्कृतिक दीप्ति, आत्मसम्मान, क्रांतिकारी चेतना, गंभीरता एवं आत्मविश्वास की भावना भी इनमें पर्याप्त मात्रा में दर्शनीय हैं ।
कुमारनाशान का काल मलयालम में नवीनता का काल है । भाषा, भावधारा और अभिव्यक्ति प्रणाली में एवं नवजागरण का अनुभव उनकी काव्य रचनाओँ में महसूस होता है । उन्होंने केवल खण्डकाव्यों द्वारा ही महाकवि की प्रतिभा दर्शायी है । अनुभूति व अभिव्यक्ति की दृष्टि से इनके खण्डकाव्य किसी भी महाकाव्य से कम नहीं हैं ।
कुमारनाशान के काव्य में आत्माभिव्यक्ति, विद्रोही चेतना, दार्शनिकता, मानवतावादी चेतना, राष्ट्रीय भावना, स्वच्छन्द प्रेम इत्यादि को उनके युगबोध की प्रमुख अनुभूतिगत प्रवृत्तियों के रूप में स्वीकार किया गया है । इसके आधार पर कवि के व्यक्तित्व में युगबोध विस्तार से प्रतिफलित होता है । वे अपनी कला को युगबोध का प्रतिबिम्ब बनाकर ईमानदारी और आत्मीयता से अपनी सृजनधर्मिता का पालन करने वाले अनूठे कलाकार थे । इनकी सारी काव्य-कृतियों में युगबोध की सभी विषयगत प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं । काव्य - संकल्पनाओं, काव्य-भावों तथा विचारों की दृष्टि से इनकी रचनाएँ अव्वल स्तर की दिखाई देती हैं ।
कुमारनाशान की प्रतिभा विकासशील है । इनकी काव्य रचना शक्ति दिन-ब-दिन बढ़ती गयी । उनके व्यक्तित्व में उदारता, स्पष्टवादिता, सरलता, निष्कपटता, आदर्शप्रियता, प्रकृतिप्रेम, असहायों का उद्धार आदि भावनाएँ अवलोकनीय हैं । वे ओज और पौरुष के कवि के रूप में भी प्रसिद्ध थे । वे संगीत के मर्मज्ञ थे । इन्होंने अपनी भाषा के अतिरिक्त अंग्रेज़ी और संस्कृत का गहरा अध्ययन किया है और अपनी रचना-प्रक्रिया में सदा-सर्वदा स्वतंत्र रहने का आग्रह किया है । कुमारनाशान बौद्ध दर्शन के करुणावाद से अभिभूत हुए हैं, उनकी विचारधारा, चिन्तन प्रणाली आदि का सहज विकास उनके काव्यों में दिखाई पड़ता है । उन्होंने मानव जीवन की गहराई में पैठने की क्षमता प्राप्त

की है। आत्मोल्लास की भावना, स्वाभाविकता और स्वच्छता उनकी कृतियों को प्रौढ़ बनायी है। उनकी प्रौढ़ प्रतिभा ने युगबोध की प्रवृत्ति को स्पर्श कर उनमें नयी शोभा भर दी है। आत्माभिव्यक्ति की जो (झलक) झाँकी इनके काव्यों में दिखाई देती है वह निश्चय ही स्वयं को परंपरामुक्त करने में अधिक सक्रिय है।

कुमारनाशान मानवतावादी कवि थे। मानवतावाद में समायी हुई आध्यात्मिक चेतना ने उनकी काव्य कृतियों को संपन्न बनाया है। भ्रष्टाचार का विरोध, सामाजिक एवं धार्मिक अंध-रुढ़ियों के खिलाफ लोहा उठाना, समाज का नवजागरण, निम्न जाति का उद्धार, मूल्य-च्युति पर क्रोध, नैतिक पतन पर दु:ख आदि मानवतावादी प्रवृत्तियाँ प्रचुर मात्रा में उनकी रचनाओं में दिखाई पडती है। इसका तात्पर्य यह है कि कुमारनाशान की रचनाओं में मानवतावादी प्रवृत्तियाँ कूट-कूट कर भरी हुई हैं।

कुमारनाशान प्रगतिशील कवि थे। उनके काव्यों में किसी-न-किसी प्रकार की प्रगतिशील विचार धारा नज़र आती है। मलयालम कविता साहित्य में कुमारानाशान ने ही सर्वप्रथम प्रगतिवादी काव्य धारा का दीप जलाया। 'चिन्ताविष्टयाय सीता', 'दुरवस्था' आदि रचनाएँ उनकी प्रगतिशील प्रवृत्ति के सुन्दर उदाहरण हैं। जगत और जीव जन्तुओं के प्रति उनका यथार्थपरक दृष्टिकोण रहा। वे जगत को स्वर्ग के रूप में दिखाना चाहते थे। मानव कल्याण द्वारा जगत का मंगल उनका लक्ष्य रहा। उनकी विचारधारा विशिष्ट एवं मौलिक है।

वे विद्रोह के सफल कवि रहे। धार्मिक व सामाजिक शोषण के विरुद्ध क्रांति का स्वर उनके काव्यों में परिलक्षित है। उदाहरण के लिए 'दुरवस्था उनके हिन्दु-मुस्लिम एकता के प्रयास का सफल परिणाम है। वे समसामयिक परिस्थितियों तथा विसंगतियों से अधिक प्रभावित थे। उन्होंने सामाजिक प्रतिबद्धता अधिक मात्रा में निभायी है, यानि वर्गीय विद्रोह व वर्गीय पुनरुत्थान के प्रति अधिक ध्यान दिया है।

कुमारनाशान के लिए नारी भोग्या नहीं थी। नारी के समस्त गुणों पर उन्होंने काफी प्रकाश डाला है। भारतीय संस्कृति का आधार एवं उनके प्रेरणास्रोत के रूप में नारी को इन्होंने स्वीकार किया है। वास्तव में नारी उनके लिए प्रेयसी है, आराध्या और आनन्द तत्व की सिद्धि करानेवाली है। उनकी नारी भावना अधिकतर लौकिक स्तर पर है। नलिनी, लीला आदि नायिकाओं के जीवन का सुन्दर, कोमल, पवित्र, रमणीक वर्णन इसका सबूत है। साथ ही साथ नारी का उत्थान कवि का लक्ष्य रहा।

कुमारनाशान के काव्यों में राष्ट्रीय चेतना का भरमार है। जन्म भूमि के प्रति वे श्रद्धा की भावना रखते हैं। वे जन सामान्य के कवि थे। सामाजिक एवं राजानीतिक कार्यों में भी कवि सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। राष्ट्रीयता की दृष्टि से वे प्रांत , भाषा, धर्म आदि संकुचित सीमाओं से बाहर उठे हैं। 'सिंहप्रसवम', 'स्वातन्त्र्यगाथा', 'सिंहनादम', परिवर्तनम' और 'उद्बोधन', 'भारत मयूरम' आदि रचनाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। कवि की राष्ट्रीयता प्रान्तीय अभिमान या राष्ट्र-प्रेम की सीमित व्याख्याओं में प्रतिबद्ध न रहकर विश्व बन्धुत्व तथा समष्टि प्रेम में परिणत होता है। उनके काव्यों में राष्ट्रीय जागृति के लिए राष्ट्र संस्कृति का यशोगान, ऐतिहासिक महान विभूतियों के चरित्र का कीर्तिमान, राष्ट्रीय मूल्यों व आदर्शों की स्थापना द्वारा सर्वहित भावना का पोषण, सामूहिक शक्ति के रूप में एकत्रित होने की प्रेरणा जैसी विचारधाराएँ यथेष्ट मात्रा में दृष्टिगोचर होती हैं।

कुमारनाशान दार्शनिक कवि थे। उनके काव्यों में किसी-न-किसी प्रकार दार्शनिकता की झाँकी मिलती है। विवेचनात्मक अध्ययन से यह पता चलता है कि कुमारनाशान पर बौद्ध एवं अद्वैत दर्शन का सम्मिलित प्रभाव पड़ा है। उनकी दार्शनिकता का केन्द्र बिन्दु प्रेम है। दरअसल कवि की दार्शनिक चेतना ने उनकी काव्य रचनाओं को अमूल्य बनाया।

कुमारनाशान प्रेमगायक के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनके काव्य प्रेम तत्व को स्पष्ट दिखाने के लिए सहायक बने हैं। उन्होंने अपने काव्यों में उच्च स्तर के प्रेम को ही व्यक्त किया है और प्रेम को उदात्त एवं गौरवमय बनाने का भरसक प्रयास भी किया है। उन्होंने अनुभूतियों के माध्यम से जीवन की गहराइयों की यात्रा की है और उनकी सभी कविताओं में प्रेम का महत्व दर्शाया गया है। प्रेमाभिव्यक्ति युगबोध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अंतर्गत कवि की अनुभूति की तीव्रता, उदात्तता और रमणीयता भी शामिल है। उनके प्रेम भाव में वासना की अपेक्षा उत्सर्ग व समर्पण का भाव अधिक प्रबल है। कवि की प्रेमाभिव्यक्ति में लौकिक और अलौकिक प्रेम के अलावा प्रकृति प्रेम, राष्ट्र प्रेम, वात्सल्य, श्रद्धा, भक्ति ,रहस्य , विरह आदि भावनाएँ भी परिलक्षित होती हैं। वास्तव में कुमारनाशान की प्रेम भावना के साथ ही उनके काव्य संसार का भी विकास हुआ है। उनके अनुसार प्रेम एक चिरन्तन सत्य है, जीवन का एक अनन्त दर्शन है। वे प्रेम के व्यापक सत्य के भक्त थे। उन्होंने अपने कार्यों में प्रेम को एक व्यापक विश्व दर्शन के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

आत्मानुभूति की तीव्रता का आधार आत्मविकास और आत्मविस्तार है। कुमारनाशान का रचना-धर्म प्रारंभ से अंत तक परंपराओं से खुद को मुक्त करते हुए स्वतंत्र भूमि पर खड़े होने का उपक्रम रहा है। इस उपक्रम में कवि का आत्मविश्वास बढ़ता हुआ नज़र आता है। वे अपनी वेदनानुभूति में सर्वत्र सचेष्ठ रहे कि कहीं भी वेदना उनकी वैयक्तिक कुण्ठा बनकर न रह जाए। वे 'नलिनी' और 'करुणा' में प्रेम की निर्बाध गति पर रोक लगाने का प्रयत्न नहीं करते। लेकिन उनकी अनुभूति की विशिष्टता यह है कि वे अनुभूतियों की तीव्रता पर कोई रोकथाम नहीं लगाना चाहते। उसके साथ ही उनकी चरम स्थिति से भी अवगत हैं। तीव्रता को आनन्द की शीतलता में विलोडित करते हुए उसे सार्वकालिक सच्चाई के रूप में परिष्कृत कर देते हैं। अनुभूति की यह उदात्तता उनके युगबोध की विशिष्टता है। उनकी कल्पना में व्यापकता एवं श्रेष्ठता का अनुभव होता है। काव्य में कल्पना की ऊँची उड़ान तथा भावना का उत्कृष्ट स्वरूप मनोज्ञ और मार्मिक है।

युगबोध के आधार पर उनके काव्यों का विवेचनात्मक अध्ययन करने से यह साबित होता है कि सामाजिक अराजकता, जीवन में आशा का महत्व, पिछड़े वर्ग का उत्थान, नारी चेतना आदि उनके काव्यों की प्रमुख खूबियाँ रहीं। उनके अनुसार प्रेम का अर्थ दूसरों का सम्मान करते हुए उनके साथ विनय के साथ रहना है। उन्होंने स्वयं पिछड़े वर्ग के लोगों से कहा है कि खूब पढ़ो, पढ़ाई के बल पर नौकरी पाओ और संगठित होकर शक्ति का अर्जन करो। वे प्रगतिशील कवि थे। स्वतंत्रता संग्राम से बढ़कर जाति-भेद के विरुद्ध संग्राम को ही वे सार्थक और महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने एकलव्य जैसे स्वअध्ययन और स्वप्रयास से ही अपना जीवन सफल बनाया। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है अपने जीवनानुभव से ही लिखा है। उनका मानना यह था कि शिक्षा से ही एक व्यक्ति के जीवन में प्रगति हो सकती है। वे सचमुच एक समाज सुधारक थे।

इस प्रकार कुमारनाशान के काव्यों में युगबोध की चेतना निखर उठी है। उन्होंने अपने काव्यों से आधुनिक मलयालम काव्य जगत में एक नये युग की नींव को दृढ़ बनाया। उनके सर्वाधिक चर्चित काव्य जैसे, 'नलिनी', 'चाण्डालभिक्षुकी',

'करुण', 'वीणपूव' आदि युगबोध से समृद्ध काव्य साबित हुए हैं जिनकी काव्य रचनाएँ मलयालम काव्य जगत में एक नया मोड़ लायीं हैं।

सन्दर्भ

1. एन. कुमारनाशान-आशान्टे पद्यकृतिकल, डी.सी. बुक्स कोट्टयम , केरल
2. एम. के. सानु-मृत्युञ्जयं काव्यजीवितं, Published by S.N. Chandrika Educational Trust, Irinjalakuda, Kerala.
3. डॉ. टी.के. रवीन्द्रन-आशानुम केरलत्तिले सामूहिक विप्लववुम, नाशनल बुक स्टाल - कोट्टयम , केरल
4. के.रामचन्दन नायर और टी.भास्करन-कुमारनाशान्टे काव्य प्रपंचम, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम- केरल